विषय-सूची

एक क-निपात(१४-२०)

१४. एतदग्र वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - २३
१. प्रथम वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - २३
२. द्वितीय वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - २४
३. तृतीय वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - २५
४. चतुर्थ वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - २५
५. पंचम वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - २६
६. षष्ठ वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - २७
७. सप्तम वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - २८
१५. असंभव वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - २९
१. प्रथम वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - २९
२. द्वितीय वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - ३०
३. तृतीय वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - ३१
१६. (बुद्धोपदिष्ट) एक धर्म - - - - - - - - - - - - - - ३३
१. प्रथम वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - ३३
२. द्वितीय वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - ३४
३. तृतीय वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - ३६
४. चतुर्थ वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - ३८
१७. प्रशांतक र धर्म वर्ग - - - - - - - - - - - - - - ४१
१८. क्षणिक वर्ग (द्वितीय) - - - - - - - - - - - - - - ४२
१९. क ायगत-स्मृति वर्ग - - - - - - - - - - - - - - ४८
२०. अमृत वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - ५०

१४. एतदग्र वर्ग

१. प्रथम वर्ग

१८८. "भिक्षुओ, मेरे भिक्षु-श्रावकों में ये अग्र (श्रेष्ठतम) हैं –

दीर्घकालीनों[1] (दीर्घ काल तक भिक्षु बने रहने वालों) में अग्र अञ्ञासिकोण्डञ्ञ[2]।

१८९. महाप्रज्ञावानों में अग्र सारिपुत्त[3]

१९०. ऋद्धिमानों में अग्र महामोग्गल्लान[4]

१९१. धुतंगधारियों में अग्र महाकस्सप[5]

१९२. दिव्यचक्षु वालों में अग्र अनुरुद्ध[6]

१९३. उच्च कुलीनों में अग्र कालिगोध-पुत्र भद्दिय[7]

---

१ एक शब्द है **'रत्तञ्ञूनं'** जिसका अनुवाद अट्ठकथा के आधार पर '(ज्ञान) रात्रि के जानकारों से किया गया है – **रत्तियो जानन्तानं**। वस्तुतः इसका अर्थ 'प्रतिष्ठित' या 'पुराना' या 'अनुभवी' है। प्रव्रजित होने के बाद जो जितनी रातें बिताता है वह उतना ही प्रतिष्ठित समझा जाता है क्योंकि वह रात्रि की शांति में ध्यान कर ज्ञान की प्राप्ति करता है। इसलिए इसे अभिधा में न अनुवाद कर लक्षणा में करना चाहिए अर्थात '(ज्ञान) रात्रि के जानकारोंसे' नहीं बल्कि 'सुप्रतिष्ठित' या 'अनुभवी' से। वस्तुतः यह शब्द उस व्यक्ति के लिए आया है जिसने प्रव्रजित होने के बाद अनेक रातें ध्यान में बितायी हैं। दूसरी बात यह है कि प्रव्रजित भिक्षु रात को व्यर्थ नहीं गँवाते, वे रात की नीरवता में ध्यान कर प्रज्ञा की प्राप्ति करते हैं जिसके फलस्वरूप वे प्रसिद्ध होते हैं। ऐसी रातों को जानने वालों को **'रत्तञ्ञू'** कहा गया है, अर्थात 'अभिज्ञात, सम्मानित, ज्ञानी' आदि। रीज डेविड्स ने इसका अनुवाद रिकोग्नाइज्ड (अभिज्ञात, सम्मानित) तथा ऑफ लॉंग स्टेन्डिंग (चिरकालिक) किया है।

२ शाक्य देश में कपिलवस्तु नगर के पास द्रोणवस्तु ग्राम में, ब्राह्मण-कुल में जन्म।

३ मगध देश में राजगृह नगर से अविदूर उपतिस्स ग्राम=नालक ग्राम (=वर्तमान सारिचक, बड़गांव-नालंदा के पास, जि० नालंदा में ब्राह्मण-कुल में जन्म।)

४ मगध-देश में राजगृह से अविदूर कोलित ग्राम में, ब्राह्मण-कुल में जन्म।

५ मगध-देश में, महातीर्थ ब्राह्मण-ग्राम में, ब्राह्मण-कुल में जन्म।

६ शाक्य देश में, कपिलवस्तु नगर में, भगवान के चाचा अमतोदन शाक्य के पुत्र; क्षत्रिय-कुल में जन्म।

७ शाक्य देश में, कपिलवस्तु नगर में, क्षत्रिय-कुल में जन्म।

१९४. मधुर-स्वर वालों में अग्र लकुण्डक-भद्दियँ

१९५. सिंहनाद करने वालों में अग्र पिण्डोलभारद्वाज[२]

१९६. धर्मकथिकोंमें अग्र मन्ताणि-पुत्र पुण्ण[३]

१९७. संक्षिप्त कहेकाविस्तार से अर्थ करनेवालों में अग्र महाकच्चानँ[४]

२. द्वितीय वर्ग

१९८. "भिक्षुओ, मेरे भिक्षु-श्रावकों में ये अग्र हैं –

मनोमय-काया निर्माण कर सकने वालों में अग्रचूळपन्थक[५]

१९९. चित्त-विवर्त (भव-चक्र को विवर्तित करने के लिए कुशल चित्तकर्म करने वालों में) कुशलों में अग्रचूळपन्थक

२००. संज्ञा-विवर्त-कुशलों में अग्र महापन्थक[६]

२०१. शांतचित्त विहारियों में अग्र सुभूति[७]

२०२. दाक्षिणेय्यों में अग्र सुभूति

२०३. आरण्यकों में अग्र खदिरवनिय रेवत[८]

२०४. ध्यानियों में अग्र कङ्खारेवतँ[९]

२०५. अत्यधिक प्रयत्नशीलों में अग्र सोण कोळिविस[१०]

२०६. सुस्पष्ट वाणी बोलने वालों में अग्र सोण कुटिकण्णँ[११]

२०७. लाभ प्राप्त करने वालों में अग्र सीवलि[१२]

२०८. श्रद्धाधिमुक्तों में (जिनकी श्रद्धा में गहरी रुचि है) अग्र वक्कलि[१३]

---

१ कोसल देश में, श्रावस्ती नगर में, धनी कुल में।

२ मगध, राजगृह में, ब्राह्मण कुल में।

३ शाक्य, कपिलवस्तु के समीप द्रोणवस्तु ब्राह्मण-ग्राम में, ब्राह्मणकुल।

४ अवन्ती देश, उज्जयिनी में, ब्राह्मण कुल में।

५ मगध, राजगृह, श्रेष्ठी-कन्या-पुत्र।

६ मगध, राजगृह, श्रेष्ठी-कन्या-पुत्र।

७ कोसल, श्रावस्ती, वैश्यकुल में।

८ मगध, नालक ब्राह्मण-ग्राम में (सारिपुत्त के अनुज)।

९ कोसल, श्रावस्ती, महाभोग-कुल में।

१० अंगदेश, चम्पानगर में, श्रेष्ठी-कुल में।

११ अवन्ती देश, कुररघर में, वैश्य कुल में।

१२ शाक्य, कुंडिया (कोलीय-दुहिता सुप्पवासा का पुत्र) क्षत्रिय कुल।

१३ कोसल, श्रावस्ती, ब्राह्मण कुल।

३. तृतीय वर्ग

२०९. "भिक्षुओ, मेरे भिक्षु-श्रावकों में अग्र हैं –
शिक्षाकामियों में अग्र राहुल[१]
२१०. श्रद्धा से प्रव्रजितों में अग्र रट्ठपाल[२]
२११. प्रथम शलाका ग्रहण करने वालों में अग्रकुण्डधान[३]
२१२. क्षिप्रप्रज्ञों [प्रतिभावानों (कवियों)] में अग्र वङ्गीस[४]
२१३. सबको प्रसन्न करने वालों में अग्रवङ्गन्त-पुत्र उपसेन[५]
२१४. शयनासन व्यवस्थापकों में अग्र मल्ल-पुत्र दब्ब[६]
२१५. देवताओं के प्रियों में अग्र पिलिन्दवच्छ[७]
२१६. क्षिप्र-अभिज्ञा प्राप्त करने वालों में अग्र बाहिय दारुचीरिय[८]
२१७. धुरंधर वक्ताओं में अग्र कुमारकस्सप[९]
२१८. प्रतिसम्भिदा प्राप्त करने वालों में अग्र महाकोट्ठित[१०]

४. चतुर्थ वर्ग

२१९. भिक्षुओ, मेरे भिक्षु-श्रावकों में ये अग्र हैं –
बहुश्रुतों में अग्र – आनन्द।
२२०. स्मृतिमानों में अग्र – आनन्द।
२२१. प्रवीणों (चतुरों) में अग्र – आनन्द।
२२२. धृतिमानों में अग्र – आनन्द।
२२३. सेवकों में अग्र – आनन्द[११]।

---

१ शाक्य, कपिलवस्तु (सिद्धार्थ कुमार के पुत्र) क्षत्रिय कुल।
२ कुरुदेश, थुल्लकोट्ठित, वैश्य कुल।
३ कोसल, श्रावस्ती, ब्राह्मण कुल।
४ कोसल, श्रावस्ती, ब्राह्मण कुल।
५ मगध, नालक ब्राह्मण-ग्राम (सारिपुत्त के अनुज) ब्राह्मण कुल।
६ मल्लदेश, अनुपियानगर, क्षत्रिय कुल।
७ कोसल, श्रावस्ती, ब्राह्मण कुल।
८ बाहिय राष्ट्र (=सतलज व्यास का दोआब, जालंधर, होशियारपुर के जिले और कपूरथला राज्य) में उत्पन्न।
९ मगध, राजगृह।
१० कोसल, श्रावस्ती, ब्राह्मण कुल।
११ शाक्य, कपिलवस्तु, अमतोदन पुत्र, क्षत्रिय कुल।

२२४. महापरिषद वालों (जिनके अनुयायियों की संख्या अधिक हो) में अग्र उरुवेल क स्सप[1]

२२५. कु लों को प्रसन्न क रने वालों में अग्र क ाळुदायी[2]

२२६. निरोगों में अग्र बाकु ल[3]

२२७. पूर्वजन्म स्मरण क रने वालों में अग्र सोभित[4]

२२८. विनयधरों में अग्र उपालि[5]

२२९. भिक्षुणियों को उपदेश देने में अग्र नन्दक[6]

२३०. इंद्रियों के द्वारों की रक्षा क रने वालों में अग्र नन्द[7]

२३१. भिक्षुओं को उपदेश देने में अग्र महाक प्पिन[8]

२३२. तेजोधातु को आलंबन बनाक र ध्यानकु शलोंमें अग्र सागत[9]

२३३. हाजिरजवाबी वक्ताओं (पटिभानेय्यकों) में अग्र राध[10]

२३४. मोटे (रूक्ष) चीवरधारियों में अग्र मोघराज[11]

५. पंचम वर्ग

२३५. "भिक्षुओ, मेरी भिक्षुणी-श्राविक ाओं में ये अग्र हैं –

दीर्घक ालीनों (दीर्घक ाल तक भिक्षुणी बने रहने वालियों) में अग्र महापजापतिगोतमी[12]

२३६. महाप्रज्ञावतियों में अग्र खेमा[13]

२३७. ऋ द्धिमतियों में अग्र उप्पलवण्णा[14]

---

१ क ाशी देश, वाराणसी नगर, ब्राह्मण कु ल।

२ शाक्य, क पिलवस्तु अमात्य के घर में।

३ वत्स्य देश, कोशाम्बी, वैश्य कु ल।

४ कोसल, श्रावस्ती, ब्राह्मण कु ल में।

५ शाक्य, क पिलवस्तु, नाई कु ल।

६ कोशल, श्रावस्ती, कु लगृह।

७ शाक्य, क पिलवस्तु (महाप्रजापतिपुत्र) क्षत्रिय कु ल।

८ सीमांत (प्रत्यंत) देश कु क्कु टवतीनगर, राजवंश।

९ कोसल, श्रावस्ती, ब्राह्मण कु ल।

१० मगध, राजगृह, ब्राह्मण कु ल।

११ कोशल, श्रावस्ती, (बावरि शिष्य) ब्राह्मण कु ल।

१२ शाक्य, क पिलवस्तु, सुद्धोदन भार्या, क्षत्रिय कु ल।

१३ मद्रदेश, सागल (स्यालकोट) नगर, राजपुत्री, मगधराज बिंबिसार की भार्या।

१४ कोशल, श्रावस्ती, श्रेष्ठी कु ल।

२३८. विनय-धारियों में अग्र पटाचारा[1]
२३९. धर्म-कथा कहने वालियों में अग्र धम्मदिन्ना[2]
२४०. ध्यानियों में अग्र नन्दा[3]
२४१. अत्यधिक प्रयत्नशीलों में अग्र सोणा[4]
२४२. दिव्यचक्षु वालियों में अग्र बकुला[5]
२४३. क्षिप्र-अभिज्ञा प्राप्त करने वालियों में अग्र भद्दा कुण्डलकेसी[6]
२४४. पूर्वजन्म अनुस्मरण करने वालियों में अग्र भद्दा कापिलानी[7]
२४५. महा अभिज्ञाप्राप्तों में अग्र भद्दक च्चाना[8]
२४६. मोटे (रूक्ष) चीवर धारण करने वालियों में अग्र किसागोतमी[9]
२४७. श्रद्धाधिमुक्तों में अग्र सिङ्गालकमाता[10]

६. षष्ठ वर्ग

२४८. "भिक्षुओ, मेरे उपासक श्रावकों में ये अग्र हैं –
सर्वप्रथम शरण में आने वालों में अग्र तपुस्स[11] और भल्लिक[12] वणिक
२४९. दायकों में अग्र अनाथपिण्डिक सुदत्त गृहपति[13]
२५०. धर्मकथिकों में अग्रमच्छिकासण्डिक चित्त गृहपति[14]
२५१. चार संग्रह वस्तुओं से (दान, मधुर वचन, उपयोगी जीवन, न्यायपूर्ण व्यवहार) परिषद का संग्रह करने वालों में अग्र हत्थक आळवक[15]

१ कोशल, श्रावस्ती, श्रेष्ठी कुल।
२ मगध, राजगृह, विसाख श्रेष्ठी की भार्या।
३ शाक्य, कपिलवस्तु, महाप्रजापति गोतमी की पुत्री।
४ कोसल, श्रावस्ती, कुलगृह।
५ कोसल, श्रावस्ती, कुलगृह।
६ मगध, राजगृह श्रेष्ठी कुल।
७ मद्रदेश, सागलनगर, ब्राह्मण कुल, (महाकस्सपभार्या)।
८ शाक्य, कपिलवस्तु, राहुलमाता (देवदहवासी सुप्पबुद्ध शाक्य की पुत्री), क्षत्रिय।
९ कोसल, श्रावस्ती, वैश्य।
१० मगध, राजगृह, श्रेष्ठी कुल।
११ असितञ्जन नगर, कुटुम्बिक गृह में।
१२ असितञ्जन नगर, कुटुम्बिक गृह में।
१३ कोसल, श्रावस्ती, सुमन श्रेष्ठी पुत्र।
१४ मगध, मच्छिकासंड, श्रेष्ठी कुल।
१५ पंचालदेश, आलवी, (=अरवल, जि० फर्रुखाबाद), राजकुमार।

२५२. उत्तम दान देने वालों में अग्र महानाम सक्क[१]
२५३. मनोहर वस्तुओं का दान देने वालों में अग्र वैशाली का उग्ग गृहपति[२]
२५४. संघसेवकों में अग्र उग्ग गृहपति[३]
२५५. अवेत्य (दृढ़) श्रद्धावानों में अग्र सूरम्बट्ठ[४]
२५६. लोगों द्वारा पसंद किये जाने वालों में अग्र कोमारभच्च जीवक[५]
२५७. विश्वस्त रूप से बातचीत करने वालों में अग्र नकुलपिता गृहपति[६]

७. सप्तम वर्ग

२५८. "भिक्षुओ, मेरी उपासिका श्राविकाओं में ये अग्र हैं –
प्रथम शरण आने वालियों में अग्र सेनानी दुहिता सुजाता[७]
२५९. दायिकाओं में अग्र विसाखा मिगार-माता[८]
२६०. बहुश्रुतों में अग्र खुज्जुत्तरा[९]
२६१. मैत्री विहार (=भावना) करने वालियों में अग्र सामावती[१०]
२६२. ध्यानियों में अग्र उत्तरा नन्दमाता[११]
२६३. प्रणीतदायिकाओं में अग्र सुप्पवासा कोलियधीता[१२]
२६४. रोगी सुश्रुषिकाओं में अग्र सुप्पिया उपासिका[१३]
२६५. अतीव प्रसन्नों में अग्र कातियानी[१४]

---

१ शाक्य, कपिलवस्तु, (अनुरुद्ध का ज्येष्ठ भ्राता), क्षत्रिय।
२ वज्जिदेश, वैशाली, श्रेष्ठी कुल।
३ वज्जिदेश, हस्तिग्राम, श्रेष्ठी कुल।
४ कोसल, श्रावस्ती, श्रेष्ठी कुल।
५ मगध, राजगृह, अभयकुमार से सालवतिका गणिका से उत्पन्न।
६ भग्ग (=भर्गदेश) (सुंसुमारगिरि) श्रेष्ठी कुल।
७ मगध, उरुवेला के सेनानीग्राम, सेनानी कुटुम्बिक की पुत्री।
८ कोसल, श्रावस्ती, वैश्य।
९ वत्स्य, कौशाम्बी, घोसक श्रेष्ठी की दाई की पुत्री।
१० भद्रवति राष्ट्र, भद्दिया (=भद्रिका) नगर, भद्रवतिक श्रेष्ठी पुत्री; (पश्चात वत्स, कौशाम्बी, घोषित, श्रेष्ठी की धर्म-पुत्री), वत्सराज उदयन की महिषी।
११ मगध, राजगृह, सुमन श्रेष्ठी के अधीन पूर्णसिंह की पुत्री।
१२ शाक्य, कुंडिया, सीवलीमाता-क्षत्रिय कुल।
१३ काशी देश, वाराणसी, कुलगृह (वैश्य कुल)
१४ अवन्ति, कुररघर, (वैश्य कुल), सोण कुटिकण्ण की माता

२६६. विश्वस्त रूप से बातचीत करने वालियों में अग्र नकुलमाता गृहपत्नी[1]

२६७. श्रवणमात्र से श्रद्धावान होने वालियों में अग्र कुलघरिका(कुरर घर वाली) काळी उपासिका[2]

* * * * *

१५. असंभव वर्ग

१. प्रथम वर्ग

२६८. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि (सम्यक) दृष्टि-प्राप्त मनुष्य किसी संस्कार को नित्य करके ग्रहण करे, इस बात की तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि पृथग्जन किसी संस्कार को नित्य करके ग्रहण करे, इस बात की गुंजाइश है।

२६९. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि (सम्यक) दृष्टि-प्राप्त मनुष्य किसी संस्कार को सुख करके ग्रहण करे, इस बात की तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि पृथग्जन किसी संस्कार को सुख करके ग्रहण करे, इस बात की गुंजाइश है।

२७०. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि (सम्यक) दृष्टि-प्राप्त मनुष्य किसी धर्म को आत्मा ('मैं', 'मेरा') करके ग्रहण करे, इस बात की तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि पृथग्जन किसी धर्म को आत्मा करके ग्रहण करे, इस बात की गुंजाइश है।

२७१. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि (सम्यक) दृष्टि-प्राप्त मनुष्य अपनी माता की जान ले, इस बात की तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि पृथग्जन अपनी माता की जान ले, इस बात की गुंजाइश है।

२७२. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि (सम्यक) दृष्टि-प्राप्त मनुष्य अपने पिता की जान ले, इस बात की तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

---

१ भग्ग देश, सुंसुमारगिरि, (नकुलपिता गृहपति की भार्या)

२ मगध, राजगृह, कुलगृह में पैदा हुई; अवन्ती कुररघर में ब्याही।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि पृथग्जन अपने पिता की जान ले, इस बात की गुंजाइश है।

२७३. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि (सम्यक) दृष्टि-प्राप्त मनुष्य अर्हत की जान ले, इस बात की तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि पृथग्जन अर्हत की जान ले, इस बात की गुंजाइश है।

२७४. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि (सम्यक) दृष्टि-प्राप्त मनुष्य प्रदुष्ट चित्त से तथागत के शरीर का खून बहावे, इस बात की तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि पृथग्जन प्रदुष्ट चित्त से तथागत के शरीर का खून बहावे, इस बात की गुंजाइश है।

२७५. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि (सम्यक) दृष्टि-प्राप्त मनुष्य संघ में भेद डाले, इस बात की तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि पृथग्जन संघ में भेद डाले, इस बात की गुंजाइश है।

२७६. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि (सम्यक) दृष्टि-प्राप्त मनुष्य किसी दूसरे शास्ता की शरण ग्रहण करे, इस बात की तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि पृथग्जन किसी दूसरे शास्ता की शरण ग्रहण करे, इस बात की गुंजाइश है।

२७७. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि एक ही लोक धातु (विश्व) में, एक ही समय में दो अर्हत सम्यक संबुद्ध एक साथ उत्पन्न हों, इस बात की तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि एक ही लोक धातु में एक ही समय में एक अर्हत सम्यक संबुद्ध उत्पन्न हों, इस बात की गुंजाइश है।"

२. द्वितीय वर्ग

२७८. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि एक ही विश्व में, एक ही समय में दो चक्रवर्ती राजा एक साथ उत्पन्न हों, इस बात की तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि एक ही विश्व में, एक ही समय में एक चक्रवर्ती राजा हो, इस बात की गुंजाइश है।

२७९. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि स्त्री अर्हत सम्यक संबुद्ध हो, इस बात की तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि पुरुष अर्हत सम्यक संबुद्ध हो, इस बात की गुंजाइश है।

२८०. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि स्त्री चक्रवर्ती राजा हो सके, इस बात की तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि पुरुष चक्रवर्ती राजा हो सके, इस बात की गुंजाइश है।

२८१-२८३. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि स्त्री शक्र बन सके ...मार बन सके ...ब्रह्म बन सके, इस बात की तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि पुरुष शक्र बन सके ... मार बन सके ... ब्रह्म बन सके, इस बात की गुंजाइश है।

२८४. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि कायिक दुश्चरित (शारीरिक दुष्कर्म, अकुशल कर्म) का इष्ट, प्रियकर, मनोनुकूल परिणाम हो, इसकी तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि कायिक दुश्चरित का अनिष्ट[1], अप्रियकर, प्रतिकूल परिणाम हो, इसकी गुंजाइश है।

२८५. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि वाचिक दुश्चरित का इष्ट, प्रियकर, मनोनुकूल परिणाम हो, इसकी तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि वाचिक दुश्चरित का अनिष्ट, अप्रियकर, प्रतिकूल परिणाम हो, इसकी गुंजाइश है।

२८६. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि मानसिक दुश्चरित का इष्ट, प्रियकर, मनोनुकूल परिणाम हो, इसकी तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि मानसिक दुश्चरित का अनिष्ट, अप्रियकर, प्रतिकूल परिणाम हो, इसकी गुंजाइश है।"

३. तृतीय वर्ग

२८७. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि कायिक सुचरित (शारीरिक शुभकर्म, कुशल कर्म) का अनिष्ट, अप्रियकर, प्रतिकूल परिणाम हो, इसकी तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

---

१ अट्ठकथा के अनुसार **'पटिघनिमित्तन्ति अनिट्ठं निमित्तं'** – अर्थात प्रतिघ निमित्त का अर्थ अनिष्ट निमित्त।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि कायिक सुचरित का इष्ट, प्रियकर, मनोनुकूल परिणामहो, इसकी गुंजाइश है।

२८८-२८९. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि वाचिक सुचरित का अनिष्ट, अप्रियकर, प्रतिकूल परिणाम हो, इसकी तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि वाचिक सुचरित का इष्ट, प्रियकर, मनोनुकूल परिणामहो, इसकी गुंजाइश है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि मानसिक सुचरित का अनिष्ट, अप्रियकर,प्रतिकूलपरिणाम हो, इसकीतनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि मानसिक सुचरित का इष्ट, प्रियकर, मनोनुकूल परिणामहो, इसकी गुंजाइश है।

२९०. "भिक्षुओ, इस बात कीसंभावना नहीं है कि कायिकदुष्कर्मकरने वाला प्राणी उसके परिणामस्वरूप, उसके कारण,शरीर के न रहने पर, मरने के बाद सुगति प्राप्तकरस्वर्गलोक में उत्पन्न हो, इसकीतनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात कीसंभावना है कि कायिकदुष्कर्मकरनेवाला प्राणी उसके परिणामस्वरूप, उसके कारण, शरीर के न रहने पर, मरने के बाद अपायगति, दुर्गति में पड़कर नरकमें पैदा हो, इसकी गुंजाइश है।

२९१-२९२. "भिक्षुओ, इस बात कीसंभावना नहीं है कि वाचिक दुष्कर्मकरनेवाला प्राणी उसके परिणामस्वरूप, उसके कारण,शरीर के न रहने पर, मरने के बाद सुगति प्राप्तकरस्वर्गलोक में उत्पन्न हो, इसकीतनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात कीसंभावना है कि वाचिक दुष्कर्मकरनेवाला प्राणी उसके परिणामस्वरूप, उसके कारण, शरीर के न रहने पर, मरने के बाद अपायगति, दुर्गति में पड़कर नरकमें पैदा हो, इसकी गुंजाइश है।

"भिक्षुओ, इस बात कीसंभावना नहीं है कि मानसिक दुष्कर्मकरनेवाला प्राणी उसके परिणामस्वरूप, उसके कारण,शरीर के न रहने पर, मरने के बाद सुगति प्राप्तकर स्वर्गलोक में उत्पन्न हो, इसकी तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात कीसंभावना है कि मानसिक दुष्कर्मकरनेवाला प्राणी उसके परिणामस्वरूप, उसके कारण, शरीर के न रहने पर, मरने के बाद अपायगति, दुर्गति में पड़करनरक में पैदा हो, इसकीगुंजाइश है।

२९३. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि कायिकसत्कर्म (शुभ कर्म, कुशल कर्म) करनेवाला प्राणी उसके परिणामस्वरूप से, उसके कारण, शरीर के न रहने पर, मरने के बाद अपायगति, दुर्गति में पड़कर नरक में पैदा हो, इसकी तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि कायिक शुभ-कर्म करनेवाला प्राणी, उसके परिणामस्वरूप, उसके कारण, शरीर के न रहने पर, मरने के बाद सुगति प्राप्तकर स्वर्गलोक में उत्पन्न हो, इसकी गुंजाइश है।

२९४-२९५. "भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि वाचिक शुभ-कर्म करनेवाला प्राणी, उसके परिणामस्वरूप, उसके कारण, शरीर के न रहने पर, मरने के बाद अपायगति, दुर्गति में पड़कर नरक में पैदा हो, इसकी तनिक भी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि वाचिक शुभ-कर्म करनेवाला प्राणी, उसके परिणामस्वरूप, उसके कारण, शरीर के न रहने पर, मरने के बाद सुगति प्राप्तकर स्वर्गलोक में उत्पन्न हो, इसकी गुंजाइश है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना नहीं है कि मानसिक शुभ-कर्म करनेवाला प्राणी, उसके परिणामस्वरूप, उसके कारण, शरीर के न रहने पर, मरने के बाद अपायगति, दुर्गति में पड़कर नरक में पैदा हो, इसकी गुंजाइश नहीं है।

"भिक्षुओ, इस बात की संभावना है कि मानसिक शुभ-कर्म करनेवाला प्राणी उसके परिणामस्वरूप, उसके कारण, शरीर के न रहने पर, मरने के बाद सुगति प्राप्तकर स्वर्गलोक में उत्पन्न हो, इसकी गुंजाइश है।"

* * * * *

१६. (बुद्धोपदिष्ट) एक धर्म

१. प्रथम वर्ग

२९६. "भिक्षुओ, एक ही धर्म है जिसका अभ्यास (भावना), जिसका बहुलीकरण (वृद्धि, संवर्धन), भिक्षु के संपूर्ण निर्वेद के लिए, वैराग्य (विराग) के लिए, निरोध के लिए, उपशमन के लिए, अभिज्ञा के लिए, संबोधि के लिए तथा निर्वाण-लाभ के लिए होता है। कौन-सा एक धर्म? बुद्धानुस्मृति।

"भिक्षुओ, इस एक धर्म की भावना, इस एक धर्म का बहुलीकरण, भिक्षु के संपूर्ण निर्वेद के लिए... होता है।

२९७. "भिक्षुओ, एक ही धर्म है जिसका अभ्यास, उसका बहुलीकरण, भिक्षु के संपूर्ण निर्वेद के लिए... होता है। कौन-सा एक धर्म? धर्मानुस्मृति। ...

संघानुस्मृति। ...शीलानुस्मृति। ...त्यागानुस्मृति। ...देवतानुस्मृति। ...आनापानस्मृति। ...मरणानुस्मृति। ...कायगतानुस्मृति। ...उपशमानुस्मृति।

"भिक्षुओ, इस एक धर्म की भावना, इस एक धर्म का बहुलीकरण, भिक्षु के संपूर्ण निर्वेद के लिए, वैराग्य के लिए, निरोध के लिए, उपशमन के लिए, अभिज्ञा के लिए, संबोधि के लिए तथा निर्वाण-लाभ के लिए होता है।"

२. द्वितीय वर्ग

२९८. "भिक्षुओ, मैं दूसरा कोई एक भी ऐसा धर्म (बात) नहीं जानता जिससे अनुत्पन्न अकुशल-धर्म उत्पन्न होते हों तथा उत्पन्न अकुशल-धर्मों में अत्यधिक विपुलता (वृद्धि) होती हो, जैसे भिक्षुओ, मिथ्यादृष्टि।

"भिक्षुओ, मिथ्यादृष्टि वाले में अनुत्पन्न अकुशल-धर्म पैदा हो जाते हैं, उत्पन्न अकुशल-धर्म अत्यधिक वैपुल्य को प्राप्त होते हैं।

२९९. "भिक्षुओ, मैं दूसरा कोई एक भी ऐसा धर्म नहीं जानता जिससे अनुत्पन्न कुशल-धर्म उत्पन्न हों तथा उत्पन्न कुशल-धर्मों में अत्यधिक विपुलता होती हो, जैसे भिक्षुओ, सम्यक-दृष्टि।

"भिक्षुओ, सम्यक-दृष्टि वाले में अनुत्पन्न कुशल-धर्म उत्पन्न हो जाते हैं, उत्पन्न कुशल-धर्म अत्यधिक वैपुल्य को प्राप्त होते हैं।

३००. "भिक्षुओ, मैं दूसरा कोई एक भी ऐसा धर्म नहीं जानता जिससे अनुत्पन्न कुशल-धर्म उत्पन्न न होते हों अथवा उत्पन्न कुशल-धर्मों की परिहानि हो जाती हो जैसे भिक्षुओ, मिथ्यादृष्टि।

"भिक्षुओ, मिथ्यादृष्टि वाले में अनुत्पन्न कुशल-धर्म उत्पन्न नहीं होते, उत्पन्न कुशल-धर्मों की परिहानिहो जाती है।

३०१. "भिक्षुओ, मैं दूसरा कोई एक भी ऐसा धर्म नहीं जानता जिससे अनुत्पन्न अकुशल-धर्म उत्पन्न न हों अथवा उत्पन्न अकुशल-धर्मों की परिहानि न हो, जैसे भिक्षुओ, सम्यक-दृष्टि।

"भिक्षुओ, सम्यक-दृष्टि वाले में अनुत्पन्न अकुशल-धर्म उत्पन्न नहीं होते और उत्पन्न अकुशल-धर्मों की परिहानिहो जाती है।

३०२. "भिक्षुओ, मैं दूसरा कोई एक भी ऐसा धर्म नहीं जानता जिससे अनुत्पन्न मिथ्यादृष्टि उत्पन्न हो जाती हो अथवा उत्पन्न मिथ्यादृष्टि वृद्धि को प्राप्त करती हो, जैसे यह अयथार्थ चिंतन करना।

"भिक्षुओ, अयथार्थ चिंतन करनेसे अनुत्पन्न मिथ्यादृष्टि उत्पन्न हो जाती है और उत्पन्न मिथ्यादृष्टि वृद्धि को प्राप्त करती है।

३०३. "भिक्षुओ, मैं दूसरा कोई एक भी ऐसा धर्म नहीं जानता जिससे अनुत्पन्न सम्यक-दृष्टि उत्पन्न हो जाती हो अथवा उत्पन्न सम्यक-दृष्टि वृद्धि को प्राप्त करती हो, जैसे यह यथार्थ चिंतन करना।

"भिक्षुओ, यथार्थ चिंतन करने से अनुत्पन्न सम्यक-दृष्टि उत्पन्न हो जाती है और उत्पन्न सम्यक-दृष्टि वृद्धि को प्राप्त करती है।

३०४. "भिक्षुओ, मैं दूसरा कोई एक भी ऐसा धर्म नहीं जानता जिससे प्राणी शरीर के न रहने पर, मरने के बाद अपायगति, दुर्गति को प्राप्तकर नरक में पैदा होते हैं जैसे कि भिक्षुओ, मिथ्यादृष्टि।

"भिक्षुओ, मिथ्यादृष्टि से युक्त प्राणी शरीर के न रहने पर, मरने के बाद अपायगति, दुर्गति को प्राप्तकर नरकमें पैदा होते हैं।

३०५. "भिक्षुओ, मैं दूसरा कोई एक भी ऐसा धर्म नहीं जानता जिससे प्राणी शरीर के न रहने पर, मरने के बाद सुगति प्राप्तकर स्वर्गलोक में उत्पन्न होते हैं, जैसे कि भिक्षुओ, सम्यक-दृष्टि।

"भिक्षुओ, सम्यक-दृष्टि से युक्त प्राणी शरीर के न रहने पर, मरने के बाद सुगति प्राप्तकर स्वर्गलोक में उत्पन्न होते हैं।

३०६. "भिक्षुओ, मिथ्यादृष्टि वाले प्राणी के जो भी मिथ्यादृष्टि के अनुसार किये गये कायिक-कर्महैं, जो भी वाचिक-कर्म हैं... जो भी मानसिक-कर्महैं... जो भी चेतना है, जो भी कामनाएं हैं, जो भी संकल्प हैं तथा जितने भी संस्कार हैं वे सभी धर्म के अनिष्ट के लिए, अप्रियकर होने के लिए, प्रतिकूल होने के लिए, अहित के लिए तथा दुःख के लिए होते हैं। ऐसा किसलिए? भिक्षुओ, दृष्टि ही बुरी है।

"भिक्षुओ, जैसे नीम का बीज हो, कोसातकी-बीजहो वा कड़वी लौकी का बीज हो और वह गीली जमीन में गाड़ा गया हो, वह जितना भी पृथ्वी-रस को ग्रहण करता है, जितना भी उदक-रस को ग्रहण करता है, वह सब तिक्त ही होता है, कड़वा ही होता है, अरुचिकर ही होता है। यह किसलिए? भिक्षुओ, बीज ही खराब है। इसी प्रकार भिक्षुओ, मिथ्या-दृष्टि वाले प्राणी के जो भी... कायिक-कर्महैं... जो भी वाचिक-कर्महैं... जो भी मानसिक-कर्म हैं... भिक्षुओ, दृष्टि ही बुरी है।

३०७. "भिक्षुओ, सम्यक-दृष्टि वाले प्राणी के जो भी सम्यक-दृष्टि के अनुसार किये गये कायिक-कर्महैं, जो भी वाचिक-कर्म हैं... जो भी मानसिक-कर्महैं... जो भी चेतना है, जो भी कामनाएं है, जो भी संकल्प हैं

तथा जितने भी संस्कार हैं वे सभी धर्म इष्ट के लिए, रुचि के लिए, मनोनुकूल होने के लिए, हित के लिए तथा सुख के लिए होते हैं। ऐसा किसलिए? भिक्षुओ, दृष्टि ही अच्छी है।

"भिक्षुओ, जैसे ऊख का बीज हो, धान का बीज हो या अंगूर का बीज हो और वह गीली जमीन में गाड़ा गया हो, वह जितना भी पृथ्वी-रस को ग्रहण करता है, जितना भी उदक-रस को ग्रहण करता है, वह सब मधुर ही होता है, रुचिकर ही होता है, स्वादिष्ट ही होता है। यह किसलिए? भिक्षुओ, बीज ही अच्छा है। इसी प्रकार भिक्षुओ, सम्यक-दृष्टि वाले प्राणी के जो भी... कायिक-कर्म हैं... जो भी वाचिक-कर्म हैं... जो भी मानसिक-कर्म हैं... भिक्षुओ, दृष्टि ही अच्छी है।"

३. तृतीय वर्ग

३०८. "भिक्षुओ, लोक में एक आदमी बहुत जनों के अहित के लिए, बहुत जनों के असुख के लिए, बहुत जनों के तथा देव-मनुष्यों के अनर्थ के लिए, अहित के लिए तथा दुःख के लिए पैदा होता है।

"कौन-सा एक आदमी?

"मिथ्यादृष्टिक जो विपरीत-दर्शन वाला होता है, वह बहुत जनों को सद्धर्म की ओर से हटाकर असद्धर्म में प्रतिष्ठापित कर देता है।

"भिक्षुओ, लोक में यह एक आदमी... दुःख के लिए पैदा होता है।"

३०९. "भिक्षुओ, लोक में एक आदमी बहुत जनों के हित के लिए, बहुत जनों के सुख के लिए, बहुत जनों के तथा देव-मनुष्यों के अर्थ के लिए, हित के लिए तथा सुख के लिए पैदा होता है।

"कौन-सा एक आदमी?

"सम्यक-दृष्टिक जो अविपरीत-दर्शन वाला होता है, वह बहुत जनों को असद्धर्म से हटाकर सद्धर्म में प्रतिष्ठापित कर देता है।

"भिक्षुओ, लोक में यह एक आदमी... सुख के लिए पैदा होता है।

३१०. "भिक्षुओ, मैं दूसरा कोई भी ऐसा धर्म नहीं जानता जो इतना महादोषपूर्ण हो जितना कि यह मिथ्यादृष्टि।

"भिक्षुओ, मिथ्यादृष्टि सर्वाधिक दोषपूर्ण है।

३११. "भिक्षुओ, मैं दूसरे किसी भी एक आदमी को नहीं जानता जो इस प्रकार बहुत जनों का अहित करने में लगा हो, बहुत जनों को असुख पहुँचाने

में लगा हो, बहुत जनों तथा देव-मनुष्यों के अनर्थ के लिए हो, अहित के लिए हो और दुःख के लिए हो, जैसे कि भिक्षुओ, यह मूर्ख मक्खलि।

"भिक्षुओ, जैसे नदी के मुहाने पर जाल फैला हो, जो बहुत सी मछलियों के अहित के लिए हो, दुःख के लिए हो, क्लेश के लिए हो, कष्ट के लिए हो, इसी प्रकार भिक्षुओ, मूर्ख मक्खलि को मनुष्य-रूपी जाल मानना चाहिए, जो बहुत जनों के अहित के लिए, दुःख के लिए, क्लेश के लिए तथा कष्ट के लिए इस लोक[1] में उत्पन्न हुआ है।

३१२. "भिक्षुओ, दुराख्यात (गलत आख्यात किया गया, गलत कहा गया) धर्म-विनय जो किसी को देता है, जिसे देता है और जो तदनुसार आचरण करता है, ये सभी बहुत अपुण्यार्जन करते हैं। यह किसलिए? भिक्षुओ, धर्म के ही दुराख्यात होने के कारण।

३१३. "भिक्षुओ, सु-आख्यात (सही आख्यात किया गया, सही कहा गया) धर्म-विनय जो किसी को देता है, जिसे देता है और जो तदनुसार आचरण करता है, वे सभी बहुत पुण्यार्जन करते हैं। यह किसलिए? भिक्षुओ, धर्म के ही सु-आख्यात होने के कारण।

३१४. "भिक्षुओ, दुराख्यात धर्म-विनय में दायक को (दान की) मात्रा जाननी चाहिए, प्रतिग्राहक को नहीं। यह किसलिए? भिक्षुओ, धर्म के दुराख्यात होने के कारण।

३१५. "भिक्षुओ, सु-आख्यात धर्म-विनय में प्रतिग्राहक को मात्रा जाननी चाहिए, दायक को नहीं। यह किसलिए? भिक्षुओ, धर्म के सु-आख्यात होने के कारण।

३१६. "भिक्षुओ, दुराख्यात धर्म-विनय में जो अत्यधिक प्रयत्नशील (बहुपरिश्रमी) होता है वह कष्ट पाता है। यह किसलिए? भिक्षुओ, धर्म के दुराख्यात होने के कारण।

३१७. "भिक्षुओ, सु-आख्यात धर्म-विनय में जो आलसी होता है वह कष्ट पाता है। यह किसलिए? भिक्षुओ, धर्म के सु-आख्यात होने के कारण।

३१८. "भिक्षुओ, दुराख्यात धर्म-विनय में जो आलसी होता है वह सुख पाता है। यह किसलिए? भिक्षुओ, धर्म के दुराख्यात होने के कारण।

---

१ यहां पालि में **'दिट्ठधम्मिकं'** शब्द है। इसमें **'दिट्ठेव धम्मे इमस्मिं येव अत्तभावे उप्पन्नफलं'** का अर्थ 'इस लोक में' या 'इस जन्म में' है। इसका अर्थ कहीं-कहीं 'इस शरीर में' भी किया है जो पालि शब्द **'अत्तभाव'** से प्राप्त है।

३१९. "भिक्षुओ, सु-आख्यात धर्म-विनय में जो अत्यधिक प्रयत्नशील होता है वह सुख पाता है। यह किसलिए? भिक्षुओ धर्म के सु-आख्यात होने के कारण।

३२०. "भिक्षुओ, जैसे थोड़ा भी गूह (विष्ठा) दुर्गंध ही देता है इसी प्रकार भिक्षुओ, मैं थोड़े भी संसार (भव) की प्रशंसा नहीं करता, यहां तक कि चुटकी बजाने भर भी नहीं।

३२१. "भिक्षुओ, जैसे थोड़ा भी मूत्र दुर्गंध ही देता है, इसी प्रकार... चुटकी बजाने भर भी नहीं।

"भिक्षुओ, जैसे थोड़ा भी थूक दुर्गंध ही देता है, इसी प्रकार... चुटकी बजाने भर भी नहीं।

"भिक्षुओ, जैसे थोड़ी भी पीप दुर्गंध ही देती है, इसी प्रकार... चुटकी बजाने भर भी नहीं।

"भिक्षुओ, जैसे थोड़ा भी लहू दुर्गंध ही देता है, इसी प्रकार... चुटकी बजाने भर भी नहीं।"

४. चतुर्थ वर्ग

३२२. "भिक्षुओ, जैसे इस जंबुद्वीप में रमणीय उद्यान, रमणीय-वन, रमणीय-भूमि तथा रमणीय पुष्करणियां थोड़ी ही हैं, अधिकता तो ऊंची-नीची भूमि, नदियों के दुर्गम प्रदेश, झाड़-झँखाड़ वाली भूमि तथा दुर्लंघ्य पर्वत प्रदेशों की ही है।

"इसी प्रकार भिक्षुओ, स्थल पर जन्म ग्रहण करने वाले (थलचर) प्राणी अल्पसंख्यक हैं, उन्हीं की संख्या अधिक है जो जल में उत्पन्न होने वाले (जलचर) हैं।

३२३. "इसी प्रकार भिक्षुओ... मनुष्य होकर जन्म ग्रहण करने वाले प्राणी अल्पसंख्यक हैं, ऐसे ही प्राणियों की संख्या अधिक है जो मनुष्येतर योनियों में जन्म ग्रहण करते हैं।

"इसी प्रकार भिक्षुओ... मध्यम-जनपदों में जन्म ग्रहण करने वाले प्राणी अल्पसंख्यक हैं, ऐसे ही प्राणियों की संख्या अधिक है जो प्रत्यंत जनपदों में अशिक्षित, म्लेच्छों में जन्म ग्रहण करते हैं।

३२४. "इसी प्रकार भिक्षुओ... जो प्राणी प्रज्ञावान हैं, जड़बुद्धि नहीं हैं, जिनके मुँह से लार नहीं टपकती (जिनका अपने आप पर संयम है) तथा जो सुभाषित-दुर्भाषित का अर्थ समझने में समर्थ हैं वे अल्पसंख्यक हैं, ऐसे ही

प्राणियों की संख्या अधिक है जो प्रज्ञावान नहीं हैं, जो जड़बुद्धि हैं, जिनके मुँह से लार टपकती है (संयम नहीं है) तथा जो सुभाषित-दुर्भाषित का अर्थ जानने में असमर्थ हैं।

३२५. "इसी प्रकार भिक्षुओ... आर्य प्रज्ञा-चक्षु से युक्त प्राणी अल्पसंख्यक हैं, ऐसे ही प्राणियों की संख्या अधिक है जो मूढ़ हैं, मिथ्यादृष्टि वाले (अविद्यागत) हैं।

३२६. "इसी प्रकार भिक्षुओ... जिन प्राणियों को तथागत का दर्शनलाभ होता है, वे अल्पसंख्यक हैं, ऐसे ही प्राणियों की संख्या अधिक है जिन्हें तथागत का दर्शनलाभ नहीं होता।

३२७. "इसी प्रकार भिक्षुओ... जिन प्राणियों को तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनय सुनने के लिए मिलता है, वे अल्पसंख्यक हैं, उन्हीं की संख्या अधिक है जिन्हें तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनय सुनने के लिए नहीं मिलता है।

३२८. "इसी प्रकार भिक्षुओ... जो प्राणी सुनकर धर्म को मन में धारण करते हैं वे अल्पसंख्यक हैं, ऐसे ही प्राणियों की संख्या अधिक है जो सुनकर धर्म को मन में धारण नहीं करते।

३२९. "इसी प्रकार भिक्षुओ... जो प्राणी धारण[1] किये हुए धर्म के अर्थ की परीक्षा करते हैं वे अल्पसंख्यक हैं, ऐसे ही प्राणियों की संख्या अधिक है जो धारण किए हुए धर्म के अर्थ की परीक्षा नहीं करते।

३३०. "इसी प्रकार भिक्षुओ... जो प्राणी अर्थ तथा धर्म को जानकर धर्मानुसार आचरण करते हैं वे अल्पसंख्यक हैं, ऐसे ही प्राणियों की संख्या अधिक है जो अर्थ तथा धर्म को जानकर भी धर्मानुसार आचरण नहीं करते।

३३१. "इसी प्रकार भिक्षुओ... जो प्राणी संविग्न होने के स्थान पर संविग्न होते हैं वे अल्पसंख्यक हैं, ऐसे ही प्राणियों की संख्या अधिक है जो संविग्न होने के स्थान पर संविग्न नहीं होते।

३३२. "इसी प्रकार भिक्षुओ... जो प्राणी संविग्न होकर यथार्थ से प्रयत्न करते हैं वे अल्पसंख्यक हैं, ऐसे ही प्राणियों की संख्या अधिक है जो संविग्न होकर भी यथार्थ से प्रयत्न नहीं करते।

३३३. "इसी प्रकार भिक्षुओ... जो प्राणी व्यवसर्ग का आलंबन लेकर (निर्वाण के उद्देश्य से) समाधि लाभ करते हैं, चित्त की एकाग्रता प्राप्त करते हैं,

---

१ **'धातानं धम्मानं अत्थं उपपरिक्खन्ति'** – 'धारण किये हुए धर्मों के अर्थ की परीक्षा करते हैं' (देखें चङ्कीसुत्त)।

वे अल्पसंख्यक हैं, ऐसे ही प्राणियों की संख्या अधिक है जो व्यवसर्ग का आलंबन लेकर समाधि लाभ नहीं करते, चित्त की एकाग्रता प्राप्त नहीं करते।

३३४. "इसी प्रकार भिक्षुओ... जो प्राणी श्रेष्ठ, उत्तम खाद्य रस के लाभी हैं वे अल्पसंख्यक हैं, ऐसे ही प्राणियों की संख्या अधिक है जो श्रेष्ठ, उत्तम खाद्य रस के लाभी नहीं हैं, और उंछवृत्ति से प्राप्त (खेत में लुनाई के बाद या रास्ते में पड़े हुए दाने को जीविका के लिए चुनना) या भिक्षापात्र में एकत्र किया हुआ भोजन खाकर गुजारा करते है।

३३५. "इसी प्रकार भिक्षुओ... जो प्राणी अर्थ-रस, धर्म-रस तथा विमुक्ति-रस के लाभी हैं वे अल्पसंख्यक हैं, ऐसे ही प्राणियों की संख्या अधिक है जो अर्थ-रस, धर्म-रस, तथा विमुक्ति-रस के लाभी नहीं हैं। इसलिए भिक्षुओ, यही सीखना चाहिए कि हम अर्थ-रस, धर्म-रस तथा विमुक्ति-रस के लाभी होंगे। भिक्षुओ, ऐसा ही सीखना चाहिए।

३३६-३३८. "भिक्षुओ, जैसे इस जंबुद्वीप में रमणीय-उद्यान, रमणीय-वन, रमणीय-भूमि तथा रमणीय-पुष्करणियां थोड़ी ही हैं, अधिकता तो ऊंची-नीची भूमि, नदियों के दुर्गम प्रदेश, झाड़-झँखाड़ वाली भूमि तथा दुर्लंघ्य पर्वत प्रदेशों की ही है।

"इसी प्रकार भिक्षुओ, जो मनुष्य-योनि से च्युत होकर फिर मनुष्य ही होकर जन्म ग्रहण करते हैं वे अल्पसंख्यक हैं, उन्हीं प्राणियों की संख्या अधिक है जो मनुष्य-योनि से च्युत होकर नरक में पैदा होते हैं। ...पशु-योनि में पैदा होते हैं। ...प्रेत होकर पैदा होते हैं।

३३९-३४१. "...इसी प्रकार भिक्षुओ, जो प्राणी मनुष्य-योनि से च्युत होकर देवों में जन्म ग्रहण करते हैं वे अल्पसंख्यक हैं, उन्हीं प्राणियों की संख्या अधिक है जो मनुष्य-योनि से च्युत होकर नरक में पैदा होते हैं। ...पशु-योनि में पैदा होते हैं। ...प्रेत होकर पैदा होते हैं।

३४२-३४४. "...इसी प्रकार भिक्षुओ, जो प्राणी देव-योनि से च्युत होकर देवों में जन्म ग्रहण करते हैं वे अल्पसंख्यक हैं, उन्हीं प्राणियों की संख्या अधिक है जो देव-योनि से च्युत होकर नरक में जन्म ग्रहण करते हैं। ...पशु-योनि में जन्म ग्रहण करते हैं। ...प्रेत होकर जन्म ग्रहण करते हैं।

३४५-३४७. "...इसी प्रकार, भिक्षुओ, जो प्राणी देव-योनि से च्युत होकर मनुष्यों में जन्म ग्रहण करते हैं वे अल्पसंख्यक हैं, उन्हीं प्राणियों की संख्या अधिक है जो देव-योनि से च्युत होकर नरक में जन्म ग्रहण करते हैं। ...पशु-योनि में जन्म ग्रहण करते हैं। ...प्रेत होकर जन्म ग्रहण करते हैं।

३४८-३५०. "...इसी प्रकार, भिक्षुओ, जो प्राणी नरक से च्युत होकर मनुष्य होकर जन्म ग्रहण करते हैं वे अल्पसंख्यक हैं, उन्हीं प्राणियों की संख्या अधिक है जो नरक से च्युत होकर नरक में जन्म ग्रहण करते हैं। ...पशु-योनि में जन्म ग्रहण करते हैं। ...प्रेत होकर जन्म ग्रहण करते हैं।

३५१-३५३. "...इसी प्रकार, भिक्षुओ, जो प्राणी नरक से च्युत होकर देवों में जन्म ग्रहण करते हैं वे अल्पसंख्यक हैं, उन्हीं प्राणियों की संख्या अधिक है जो नरक से च्युत होकर नरक में जन्म ग्रहण करते हैं। ...पशु-योनि में जन्म ग्रहण करते हैं। ...प्रेत होकर जन्म ग्रहण करते हैं।

३५४-३५६. "...इसी प्रकार, भिक्षुओ, जो प्राणी पशु-योनि से च्युत होकर मनुष्यों में जन्म ग्रहण करते हैं वे अल्पसंख्यक हैं, उन्हीं प्राणियों की संख्या अधिक है जो पशु-योनि से च्युत होकर नरक में पैदा होते हैं। ...पशु-योनि में पैदा होते हैं। ...प्रेत होकर जन्म ग्रहण करते हैं।

३५७-३५९. "...इसी प्रकार, भिक्षुओ, जो प्राणी पशु-योनि से च्युत होकर देवों में जन्म ग्रहण करते हैं वे अल्पसंख्यक हैं, उन्हीं प्राणियों की संख्या अधिक है जो पशु-योनि से च्युत होकर नरक में पैदा होते हैं। ...पशु-योनि में पैदा होते हैं। ...प्रेत होकर जन्म ग्रहण करते हैं।

३६०-३६२. "...इसी प्रकार, भिक्षुओ, जो प्राणी प्रेत-योनि से च्युत होकर मनुष्यों में जन्म ग्रहण करते हैं वे अल्पसंख्यक हैं, उन्हीं की संख्या अधिक है जो प्रेत-योनि से च्युत होकर नरक में जन्म ग्रहण करते हैं। ...पशु-योनि में पैदा होते हैं। ...प्रेत होकर जन्म ग्रहण करते हैं।

३६३-३६५. "...इसी प्रकार, भिक्षुओ, जो प्राणी प्रेत-योनि से च्युत होकर देवों में जन्म ग्रहण करते हैं वे अल्पसंख्यक हैं, उन्हीं की संख्या अधिक है जो प्रेत-योनि से च्युत होकर नरक में जन्म ग्रहण करते हैं। ...पशु-योनि में जन्म ग्रहण करते हैं। ...प्रेत होकर जन्म ग्रहण करते हैं।"

* * * * *

१७. प्रशांतकरधर्म वर्ग

३६६-३८१. "भिक्षुओ, यह जो आरण्यकत्व है, यह निश्चयपूर्वक लाभ है। यह जो पिंडपात्रिकत्व (मात्र भिक्षाटन से प्राप्त भोजन ग्रहण करना) है, यह जो पांशुकूलिकत्व (=फटे-पुराने चीथड़ों के चीवर धारण करना) है, यह जो त्रि-चीवरधारी होना है, यह जो धर्मकथिक होना है, यह जो विनयधर होना है, यह जो बहुश्रुत होना है, यह जो स्थविर होना है, यह जो चीवर का उचित रूप

से धारण करना है, यह जो अनुयायियों का होना है, यह जो बहुत अनुयायियों का होना है, यह जो श्रेष्ठ-कुलक होना है, यह जो परिष्कृतवर्ण वाला होना है, यह जो सुस्पष्ट वाणी वाला होना है, यह जो अल्पेच्छता है तथा यह जो निरोग होना है, यह सब निश्चयपूर्वक लाभ हैं।"

* * * * *

१८. क्षणिक वर्ग (द्वितीय)

३८२. "भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु चुटकी बजाने भर ही प्रथम ध्यान का अभ्यास करता है तो, हे भिक्षुओ, इतने से ही वह भिक्षु ध्यान से रिक्त नहीं हो (अरिक्तध्यानी हो) विचरण करता है, शास्ता के अनुशासन में रहने वाला, उनके उपदेश के अनुसार आचरण करने वाला वह भिक्षु व्यर्थ ही राष्ट्र-पिंड खाने वाला नहीं होता। जो भिक्षु, इसका बहुत अभ्यास करते हैं उनका तो कहना ही क्या।

३८३-३८९. "भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु, चुटकी बजाने भर भी दूसरे ध्यान का अभ्यास करता है...

"तीसरे ध्यान का अभ्यास करता है...

"चौथे ध्यान का अभ्यास करता है...

"मैत्री के आधार पर चित्त-विमुक्ति का अभ्यास करता है...

"करुणा के आधार पर चित्त-विमुक्ति का अभ्यास करता है...

"मुदिता के आधार पर चित्त-विमुक्ति का अभ्यास करता है...

"उपेक्षा के आधार पर चित्त-विमुक्ति का अभ्यास करता है...

३९०-३९३. "काया में कायानुपश्यी[1] होकर विहार करता है, श्रमशील, संप्रज्ञानी, स्मृतिमान तथा लोक (काया रूपी) में अभिध्या (लोभ) -दौर्मनस्य (द्वेष) को हटाकर;

"वेदनाओं में वेदनानुपश्यी होकर...

"चित्त में चित्तानुपश्यी होकर...

"धर्मों में धर्मानुपश्यी होकर...

---

१ **'काये कायानुपस्सी विहरति'** का अनुवाद 'काय के प्रति कायानुपश्यी होकर' भी किया जाता है। वस्तुतः इसका अर्थ है 'काया में कायानुपश्यी होकर विपश्यना करना'। इस साढ़े तीन हाथ की काया में ही अनुपश्यना करते हैं। जैसे आनापानसति इरियापथ आदि की जब हम अनुपश्यना करते हैं तब काया में ही करते हैं जो यथाभूत है। 'काया के प्रति' का तो अर्थ होगा 'काया के संबंध में, काया के विषय में' जो यथाभूत न होकर काल्पनिक भी हो सकता है।

३९४-३९७. "अनुत्पन्न पापपूर्ण अकुशल धर्मों को उत्पन्न न होने देने के लिए संकल्प (बलवती कामना) करता है, प्रयत्न करता है, पराक्रम (वीर्यारंभ) करता है, चित्त को उसी में लगाये रखता है, कठोरपरिश्रम करता है।

"उत्पन्न पापपूर्ण अकुशल-धर्मों के प्रहाण के लिए संकल्प करता है, प्रयत्न करता है, पराक्रम करता है, चित्त को उसी में लगाये रखता है, कठोर परिश्रम करता है।

"अनुत्पन्न कुशल-धर्मों को उत्पन्न करने के लिए संकल्प करता है, प्रयत्न करता है, पराक्रम करता है, चित्त को उसी में लगाये रखता है, कठोर परिश्रम करता है।

"उत्पन्न कुशल-धर्मों को स्थित करने के लिए, न भुलाने (लोप न होने) के लिए, बढ़ाने के लिए, विपुलता को प्राप्त कराने के लिए, भावना की पूर्णता को प्राप्त कराने के लिए संकल्प करता है, प्रयत्न करता है, पराक्रम करता है, चित्त को उसी में लगाये रखता है, कठोरपरिश्रम करता है।

३९८-४०१. "छंद (संकल्प)-समाधि-प्रधान-संस्कार युक्त ऋद्धि[1] की भावना (का अभ्यास) करता है...

"वीर्य (परिश्रम)-समाधि-प्रधान-संस्कार युक्त ऋद्धि की भावना करता है...

"चित्त-समाधि-प्रधान-संस्कार युक्त ऋद्धि की भावना करता है...

"मीमांसा-समाधि-प्रधान-संस्कार युक्त ऋद्धि की भावना करता है...

४०२-४०६. "श्रद्धा-इंद्रिय की भावना करता है...

"वीर्य-इंद्रिय की भावना करता है...

"स्मृति-इंद्रिय की भावना करता है...

"समाधि-इंद्रिय की भावना करता है...

"प्रज्ञा-इंद्रिय की भावना करता है...

४०७-४११. "श्रद्धा-बल की भावना करता है...

---

१ **इद्धिपाद** (ऋद्धिपाद) चार हैं:

(१) **छन्दसमाधिपधान सङ्खारसमन्नागत** = छंद (संकल्प) समाधि प्रधान (प्रयत्न) संस्कार (युक्त) ऋद्धि की भावना करता है।

(२) **वीर्यसमाधिपधान सङ्खारसमन्नागत** = वीर्य (परिश्रम) संस्कार (युक्त) ऋद्धि की भावना करता है।

(३) **चित्तसमाधिपधान सङ्खारसमन्नागत** = चित्त युक्त ऋद्धि की भावना करता है।

(४) **वीमंसासमाधिपधान सङ्खारसमन्नागत** = मीमांसा युक्त ऋद्धि की भावना करता है।

"वीर्य-बल की भावना करता है...

"स्मृति-बल की भावना करता है...

"समाधि-बल की भावना करता है...

"प्रज्ञा-बल की भावना करता है...

४१२-४१८. "स्मृति-संबोधि-अंग की भावना करता है...

"धर्मविचय-संबोधि-अंग की भावना करता है...

"वीर्य-संबोधि-अंग की भावना करता है...

"प्रीति-संबोधि-अंग की भावना करता है...

"प्रश्रब्धि-संबोधि-अंग की भावना करता है...

"समाधि-संबोधि-अंग की भावना करता है...

"उपेक्षा-संबोधि-अंग की भावना करता है...

४१९-४२६. "सम्यक-दृष्टि की भावना करता है...

"सम्यक-संकल्प की भावना करता है...

"सम्यक-वाणी की भावना करता है...

"सम्यक-कर्मान्त की भावना करता है...

"सम्यक-आजीविका की भावना करता है...

"सम्यक-व्यायाम (प्रयत्न) की भावना करता है...

"सम्यक-स्मृति की भावना करता है...

"सम्यक-समाधि की भावना करता है...

४२७-४३४. "अपनी आंतरिक रूप-संज्ञा को जानकर बाहर के सीमित सुवर्ण-दुर्वर्ण रूपों को देखता है और उन्हें अपने वश में कर लेने पर उसकी धारणा होती है कि 'मैं जानता हूं, देखता हूं'...

"अपनी आंतरिक रूप-संज्ञा को जानकर बाहर के असीम सुवर्ण-दुर्वर्ण रूपों को देखता है और उन्हें अपने वश में कर लेने पर उसकी धारणा होती है कि 'मैं जानता हूं, देखता हूं'...

"अपनी आंतरिक अरूप-संज्ञा को जानकर बाहर के सीमित सुवर्ण-दुर्वर्ण रूपों को देखता है और उन्हें अपने वश में कर लेने पर उसकी धारणा होती है कि 'मैं जानता हूं, देखता हूं'...

"अपनी आंतरिक अरूप-संज्ञा को जानकर बाहर के असीम सुवर्ण-दुर्वर्ण रूपों को देखता है और उन्हें अपने वश में कर लेने पर उसकी धारणा होती है कि 'मैं जानता हूं, देखता हूं'...

"अपनी आंतरिक अरूप-संज्ञा को जानकर बाहर के नीले, नील-वर्ण के, नील रंग के उदाहरण वाले (नील रंग जैसे) तथा नीली-चमक के रूपों को देखता है और उन्हें अपने वश में कर लेने पर उसकी धारणा होती है कि 'मैं जानता हूं, देखता हूं'...

"अपनी आंतरिक अरूप-संज्ञा को जानकर बाहर के पीले, पीत-वर्ण के, पीले रंग के उदाहरण वाले तथा पीली-चमक के रूपों को देखता है...

"अपनी आंतरिक अरूप-संज्ञा को जानकर बाहर के लाल, रक्त-वर्ण के, लाल रंग के उदाहरण वाले तथा लाल-चमक के रूपों को देखता है...

"अपनी आंतरिक अरूप-संज्ञा को जानकर बाहर के सफेद, श्वेत-वर्ण के, सफेद रंग के उदाहरणवाले, सफेद-चमक के रूपों को देखता है...

४३५-४४२. "रूप वाला (भौतिक शरीर वाला होकर) होकर रूपों को देखता है...

"अपनी आंतरिक अरूप-संज्ञा को जानकर बाहर के रूपों को देखता है और उन्हें अपने वश में कर लेने पर उसकी धारणा होती है कि 'मैं जानता हूं, देखता हूं...

"शोभन[१] है" धारणा वाला होकर (वह ध्यान करने के लिए) प्रवृत्त होता है।

"सब प्रकार से रूप-संज्ञाओं का अतिक्रमण कर, प्रतिघ-संज्ञाओं को अस्त कर, नानात्व-संज्ञाओं को मन से दूर कर 'आकाश अनंत है' ऐसा मान कर आकासानञ्चायतन को प्राप्त कर विहरकरता है...

"सब प्रकार से आकासानञ्चायतन का अतिक्रमण कर 'विज्ञानान्त्यायतन है' ऐसा मानकर विज्ञानान्त्यायतन को प्राप्त कर विहरकरता है...

"सब प्रकार से विज्ञानान्त्यायतन का अतिक्रमण कर 'कुछ नहीं है' ऐसा मानकर 'आकिञ्चञ्ञायतन' को प्राप्त कर विहरकरता है...

"सब प्रकार से 'आकिञ्चञ्ञायतन' का अतिक्रमण कर 'नैवसंज्ञानासंज्ञायतन' को प्राप्त कर विहरकरता है...

"सब प्रकार से 'नैवसंज्ञानासंज्ञायतन' का अतिक्रमण कर 'सञ्ञावेदयितनिरोध' को प्राप्त कर विहरकरता है...

४४३-४५२. "पृथ्वी-कसिण की भावना करता है...

---

१ यहां **'अधिमुत्तो'** (बु. सं. अधिमुक्त) का अर्थ 'प्रवृत्त होना' है। अतः **'सुभन्तेव अधिमुत्तो होति'** का अर्थ 'शोभन है' में प्रवृत्त होता है। इसका अर्थ 'शोभन है' इसी धारणा वाला होता है। पर यहां अर्थ सिर्फ 'धारणा वाला होना' नहीं, बल्कि प्रवृत्त होना है।

"जल-क सिण की भावना क रता है...
"तेज (=अग्नि)-क सिण की भावना क रता है...
"वायु-क सिण की भावना क रता है...
"नील-क सिण की भावना क रता है...
"पीत-क सिण की भावना क रता है...
"लोहित-क सिण की भावना क रता है...
"अवदात (=श्वेत)-क सिण की भावना क रता है...
"आक ाश-क सिणकी भावना क रता है...
"विज्ञान-क सिण की भावना क रता है...
४५३-४६२. अशुभ-संज्ञा की भावना क रता है...
"मरण-संज्ञा की भावना क रता है...
"आहार के संबंध में प्रतिकू ल-संज्ञा की भावना क रता है...
"सारे लोक के प्रति अनासक्ति-भाव की भावना क रता है ...
"अनित्य-संज्ञा की भावना क रता है...
"अनित्य में दु:ख-संज्ञा की भावना क रता है...
"दु:ख में अनात्म-संज्ञा की भावना क रता है...
"प्रहाण-संज्ञा की भावना क रता है...
"वैराग्य-संज्ञा की भावना क रता है...
"निरोध-संज्ञा की भावना क रता है...
४६३-४७२. "अनित्य-संज्ञा की भावना क रता है...
"अनात्म-संज्ञा की भावना क रता है...
"मरण-संज्ञा की भावना क रता है...
"आहार के संबंध में प्रतिकू ल संज्ञा की भावना क रता है...
"सारे लोक के प्रति अनासक्ति-भाव की भावना क रता है...
"अस्थि-संज्ञा की भावना क रता है...
"(लाश में) कीड़े पड़ जाने की संज्ञा की भावना क रता है...
"नीली पड़ जाने की संज्ञा की भावना क रता है...
"क्षतविक्षत हो जाने की संज्ञा की भावना क रता है...
"सूज जाने की संज्ञा की भावना क रता है...
४७३-४८२. "बुद्धानुस्मृति की भावना क रता है...

"धर्मानुस्मृति की भावना करता है...
"संघानुस्मृति की भावना करता है...
"शील-अनुस्मृति की भावना करता है...
"त्यागानुस्मृति की भावना करता है...
"देवतानुस्मृति की भावना करता है...
"आनापान-स्मृति की भावना करता है...
"मरण-स्मृति की भावना करता है...
"कायगत-स्मृति की भावना करता है...
"उपशमानुस्मृति की भावना करता है...
४८३-४९२. "प्रथम ध्यान के साथ श्रद्धा-इंद्रिय की भावना करता है...
"प्रथम ध्यान के साथ वीर्य-इंद्रिय की भावना करता है...
"प्रथम ध्यान के साथ स्मृति-इंद्रिय की भावना करता है...
"प्रथम ध्यान के साथ समाधि-इंद्रिय की भावना करता है...
"प्रथम ध्यान के साथ प्रज्ञा-इंद्रिय की भावना करता है...
"प्रथम... श्रद्धा-बल की भावना करता है...
"प्रथम... वीर्य-बल की भावना करता है...
"प्रथम... स्मृति-बल की भावना करता है...
"प्रथम... समाधि-बल की भावना करता है...
"प्रथम... प्रज्ञा-बल की भावना करता है...
४९३-५६२. "द्वितीय ध्यान के साथ...
"तृतीय ध्यान के साथ...
"चतुर्थ ध्यान के साथ...
"मैत्री के साथ...
"करुणा के साथ...
"मुदिता के साथ...
"उपेक्षा के साथ...
"श्रद्धा-इंद्रिय की भावना करता है...
"वीर्य-इंद्रिय की भावना करता है...
"स्मृति-इंद्रिय की भावना करता है...
"समाधि-इंद्रिय की भावना करता है...

"प्रज्ञा-इंद्रिय की भावना करता है...

"श्रद्धा-बल की भावना करता है...

"वीर्य-बल की भावना करता है...

"स्मृति-बल की भावना करता है...

"समाधि-बल की भावना करता है...

"प्रज्ञा-बल की भावना करता है...

"इस प्रकार के भिक्षु को, हे भिक्षुओ! अरिक्तध्यानी कहते हैं, शास्ता के अनुशासन में रहने वाला, उनके उपदेश के अनुसार आचरण करने वाला वह भिक्षु व्यर्थ ही राष्ट्र-पिंड खाने वाला नहीं होता। जो भिक्षु इसका बहुत अभ्यास करते हैं, उनका तो कहना ही क्या!"

* * * * *

१९. कायगत-स्मृति वर्ग

५६३. "भिक्षुओ, जो कोई भी चित्त से महासमुद्र का स्पर्श करता है (चिंतन करता है), समुद्र में पड़ने वाली छोटी नदियां भी उसके अंतर्गत ही आ जाती हैं, इसी प्रकार भिक्षुओ, जो कोई कायगत-स्मृति को भावित कर लेता है, उसका बहुलीकरण कर लेता है, तो जितने भी विद्यापक्षीय कुशल-धर्म हैं उन सबका समावेश उसके अंतर्गत हो जाता है।

५६४-५७०. "भिक्षुओ, एक धर्म की भावना, बहुलीकरण महान संवेग के लिए होता है। ...

"महान अर्थ के लिए होता है...

"महान योग-क्षेम (कल्याण) के लिए होता है...

"स्मृति-संप्रज्ञान के लिए होता है...

"ज्ञान-दर्शन-लाभ के लिए होता है...

"इसी जन्म में सुखपूर्वक रहने के लिए होता है ...

"विद्या-विमुक्ति-फल के साक्षात करने के लिए होता है।

"कौन-सा एक धर्म? कायगतस्मृति। भिक्षुओ, यही एक धर्म है जिसकी भावना... विद्या-विमुक्ति-फल के साक्षात करने के लिए होता है।

५७१. "भिक्षुओ, एक धर्म के भावित करने पर, बहुलीकरण करने पर काया भी प्रश्रब्ध होती है, चित्त भी प्रश्रब्ध होता है, वितर्क-विचार भी उपशमित हो जाते हैं तथा सारे के सारे विद्यापक्षीय धर्म भावना की परिपूर्णता

को प्राप्त हो जाते हैं। किस एक धर्म के ? कायगत-स्मृति के। भिक्षुओ, इस एक धर्म को भावित... प्राप्त हो जाते हैं।

५७२. "भिक्षुओ, एक धर्म के भावित करने पर, बहुलीकरण करने पर अनुत्पन्न अकुशल-धर्म उत्पन्न नहीं होते, उत्पन्न अकुशल-धर्मों की परिहानि हो जाती है। किस एक धर्म के ? कायगत-स्मृति के।

"भिक्षुओ, इस एक धर्म के भावित... परिहानि हो जाती है।

५७३. "भिक्षुओ, एक धर्म के भावित करने पर, बहुलीकरण करने पर अनुत्पन्न कुशल-धर्म उत्पन्न हो जाते हैं, उत्पन्न कुशल-धर्म अत्यधिक वैपुल्य को प्राप्त होते हैं। किस एक धर्म के ? कायगत-स्मृति के।

"भिक्षुओ, इस एक धर्म के भावित... प्राप्त होते हैं।

५७४. "भिक्षुओ, एक धर्म के भावित करने पर, बहुलीकरण करने पर अविद्या का प्रहाण होता है, विद्या उत्पन्न होती है, अहंकार का नाश होता है, अनुशयों का समुद्घात होता है तथा संयोजनों का प्रहाण होता है। किस एक धर्म के ? कायगत-स्मृति के।

"भिक्षुओ, इस एक धर्म के भावित... प्रहाण होता है।

५७५-५७६. "भिक्षुओ, एक धर्म की भावना, बहुलीकरण प्रज्ञा के प्रस्फुटन के लिए होता है, अनुत्पाद परिनिर्वाण (इंधन रहित, जहां पुनर्जन्म का कारण बनने वाला कोई कर्म-बीज शेष नहीं रहता) के लिए होता है। किस एक धर्म की ? कायगत-स्मृति की।

"भिक्षुओ, इस एक धर्म की भावना... होता है।

५७७-५७९. "भिक्षुओ, एक धर्म के भावित करने पर, बहुलीकरण करने पर अनेक धातुओं का प्रतिवेधन होता है... नाना धातुओं का प्रतिवेधन होता है... अनेक धातुओं के विश्लेषण करने की प्रतिसम्भिदा[1] होती है। किस एक धर्म के ? कायगत-स्मृति के।

"भिक्षुओ, इस एक धर्म के भावित... होती है।

५८०-५८३. "भिक्षुओ, एक धर्म की भावना, बहुलीकरण स्रोतापत्ति-फल के साक्षात्कार के लिए होता है, सकृदागामी-फल के साक्षात्कार के लिए होता है, अनागामी-फल के साक्षात्कार के लिए होता है, अर्हत-फल के साक्षात्कार के लिए होता है। किस एक धर्म का ? कायगत-स्मृति का।

"भिक्षुओ, इस एक धर्म की भावना... होता है।

---

१ देखें पादटिप्पणी २, पृष्ठ २६

५८४-५९९. "भिक्षुओ, एक धर्म की भावना, बहुलीकरण प्रज्ञा के लिए होता है, प्रज्ञा की वृद्धि के लिए होता है, प्रज्ञा वैपुल्य के लिए होता है, महती-प्रज्ञा के लिए होता है, बहु-प्रज्ञा के लिए होता है, विपुल-प्रज्ञा के लिए होता है, गंभीर-प्रज्ञा के लिए होता है, दूर-प्रज्ञा के लिए होता है, भूरि-प्रज्ञा के लिए होता है, प्रज्ञा बाहुल्य के लिए होता है, शीघ्र-प्रज्ञा के लिए होता है, स्फूर्त-प्रज्ञा के लिए होता है, प्रसन्न-प्रज्ञा के लिए होता है, क्षिप्र-प्रज्ञा के लिए होता है, तीक्ष्ण-प्रज्ञा के लिए होता है, तथा निर्वेधिक-प्रज्ञा के लिए होता है। किस एक धर्मका? कायगत-स्मृतिका।

"भिक्षुओ, इस एक धर्म की भावना... होता है।"

* * * * *

२०. अमृत वर्ग

६००. "भिक्षुओ, जो कायगत-स्मृतिका परिभोग नहीं करते वे अमृत का परिभोग नहीं करते। भिक्षुओ, जो कायगत-स्मृतिका परिभोग करते हैं वे अमृत का परिभोग करते हैं।

६०१. "भिक्षुओ, जिन्होंने कायगत-स्मृति का परिभोग नहीं किया, उन्होंने अमृत का परिभोग नहीं किया। भिक्षुओ, जिन्होंने कायगत-स्मृति का परिभोग किया, उन्होंने अमृत का परिभोग किया।

६०२. "भिक्षुओ, जिनकी कायगत-स्मृतिका ह्रास हो गया उनके अमृत का ह्रास हो गया। भिक्षुओ, जिनकी कायगत-स्मृतिका ह्रास नहीं हुआ उनके अमृत का ह्रास नहीं हुआ।

६०३. "भिक्षुओ, जो कायगत-स्मृति करने से चूक गया वह अमृत पाने से चूक गया। भिक्षुओ, जो कायगत-स्मृति करने से नहीं चूका वह अमृत पाने से नहीं चूका।

६०४. "भिक्षुओ, जिन्होंने कायगत-स्मृति के प्रति प्रमाद किया, उन्होंने अमृत के प्रति प्रमाद किया। भिक्षुओ, जिन्होंने कायगत-स्मृति के प्रति प्रमाद नहीं किया उन्होंने अमृत के प्रति प्रमाद नहीं किया।

६०५. "भिक्षुओ, जो कायगत-स्मृतिको भूल गये वे अमृत को भूल गये। भिक्षुओ, जो कायगत-स्मृतिको नहीं भूले, वे अमृतको नहीं भूले।

६०६. "भिक्षुओ, जिन्होंने कायगत-स्मृति का सेवन (अभ्यास) नहीं किया, उन्होंने अमृत का सेवन नहीं किया। भिक्षुओ, जिन्होंने कायगत-स्मृति का सेवन किया उन्होंने अमृतका सेवन किया।

६०७. "भिक्षुओ, जिन्होंने कायगत-स्मृति को भावित नहीं किया, उन्होंने अमृत को भावित नहीं किया। भिक्षुओ, जिन्होंने कायगत-स्मृति को भावित किया उन्होंने अमृत को भावित किया।

६०८. "भिक्षुओ, जिन्होंने कायगत-स्मृति का बहुलीकरण नहीं किया, उन्होंने अमृत का बहुलीकरण नहीं किया। भिक्षुओ, जिन्होंने कायगत-स्मृति का बहुलीकरण किया, उन्होंने अमृत का बहुलीकरण किया।

६०९. "भिक्षुओ, जो कायगत-स्मृति से अनभिज्ञ रहे, वे अमृत से अनभिज्ञ रहे। भिक्षुओ, जो कायगत-स्मृति से अनभिज्ञ नहीं रहे वे अमृत से अनभिज्ञ नहीं रहे।

६१०. "भिक्षुओ, जिन्हें कायगत-स्मृति का परिज्ञान नहीं हुआ, उन्हें अमृत का परिज्ञान नहीं हुआ। भिक्षुओ, जिन्हें कायगत-स्मृति का परिज्ञान हुआ, उन्हें अमृत का परिज्ञान हुआ।

६११. "भिक्षुओ, जिन्होंने कायगत-स्मृति का साक्षात्कार नहीं किया, उन्होंने अमृत का साक्षात्कार नहीं किया। भिक्षुओ, जिन्होंने कायगत-स्मृति का साक्षात्कार किया, उन्होंने अमृत का साक्षात्कार किया।"

ऐसा भगवान ने कहा। भिक्षुओ ने प्रसन्न हो भगवान के कथन का अभिनंदन किया।

एककनिपातसमाप्त।

* * * * *